IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत सरकार के पमुख मंत्रालयों के व्यय का वित्तीय वि"लेशण

डॉ0 आलोक सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर

वाणिज्य संकाय,

श्री गणे"ा राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

डोभी, जौनपुर(यू0पी0)

सार :–

लग–भग सभी लोकतन्त्रिक दे"ाो में जनता द्वारा चुने गयो प्रतिनिधि द्वारा दे"ा का प्र"ाासन चलाया जाता है। दे"ा की प्र"ाासन चलाने के लिए तथा नियम बनाने के लिए संसद तथा विधान सभाये होती है और कार्यो को सम्पादित करने के लिए मंत्रालय होते है जो विभिन्न क्षेत्रो से सम्बन्ध रखते है। भारत एक लोकतान्त्रिक दे"ा है तथा अपने कार्यो का सम्पादन मंत्रालयों द्वारा करता है इन मंत्रालयों द्वारा जो कार्य किये जाते है उसका हमरे दे"ा की अर्थव्यवस्थ, रोजगार, सामाजिक एवं सामुदायिक विकास, उद्योग, कृशि, वाणिज्य, आयात एवं निर्यात आदि पर गहरा प्रभाव पडता है। दे"ा की आजादी से अब तक के भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालायो के व्ययो का आगर वित्तीय वि"लेशण किया जाय तो पता चलता है की उसमें हमे"ाा वृद्धि की प्रवृत्ति दिखयी देती है अन्तर केवल इतना है की किसी मंत्रालय में बढने की दर अधिक है तो किसी मंत्रालय में उसकी दर कम है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के व्ययों में वृद्धि का प्रमुख कारण दे"ा की जनसंख्या में तेजी स वृद्धि ही रहा है क्योकि जनसंख्या में वृद्धि होने से सुविधाओं में भी वृद्धि करना पडता है जिससे मंत्रालयों के व्यय मे भी वृद्धि हो जाती है। भारत सरकार का मुख्य उद्दे"य दे"ा में कल्याणकारी राज्य की स्थापना का रहा है जिसके कारण, कल्याण से सम्बन्धित मंत्रालयो के व्ययो मे भी लागातार वृद्धि होती रही है।

भूमिकाः—

किसी भी देश में सरकारी व्यय की प्रकृति एवं आकार उस दे"ा की राजनीतिक द"ाओं, भाासन प्रणाली, आर्थिक विकास की अवस्था तथा सकार क आर्थिक नीति के उद्दे"य पर निर्भर करता है। भारत एक विकास"ाील दे"ा है, इसलिए भारत सरकार के व्यय में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालायो के व्यय को देखा जाय तो उसमें वर्श दर वर्श वृद्धि की ही प्रवृत्ति रही है। भारत सरकार का मुख्य उद्देय कल्याणकारी राज्य की स्थापना की रही है जिसके कारण स भारत सरकार के व्यय में लागातार वृद्धि होती रही है। भारत एक विकास"ाील दे"ा है और अपना आर्थिक प्रगति करने के लिए भी अपने मंत्रालयो के व्ययो में वृद्धि कर रहा है।

भारत सरकार के लोक व्यय की मुख्य प्रवृत्तियाँः— भारत जनसंख्या की दृश्टि से एक वडा दे"ा है जहाँ प्रकृतिक संसाधनों को प्रचुरता पाई जाती है, परन्तु यहाँ पर कृशि अभी पिछडी अवस्था में है। औद्योगिक दृश्टि से भारत का विकास कम हुआ है, प्रति व्यक्ति आय कम है तथा जीवन स्तर भी गिरा हुआ है। परिस्थितियों को बदलने के लिए बहुत से मंत्रालयों का गठन किया गया तथा उनके व्यय में भी वृद्धि की गयी है। भारत के मंत्रालयों के व्ययो पर लोक नीति का गहरा प्रभाव पडता है।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत सरकार के मंत्रालयों का कोई वि"ोश स्थान नही था लेकिन जब दे"ा को स्वतन्त्रता मिली तो दे"ा के विकास में मंत्रालयों की भूमिक आहम हो गयी

एक लम्बे समय से सरकार की जिम्मेदारी रही है कि वह दे"ा को विदे"ी आकमण के विरूद्ध सैनिक व्यवस्था द्वारा संरक्षित रखे, सडको इत्यादि को बनवाये और नागरिकों के लिए ि"ाक्षा का प्रबन्ध कर । गत वर्शो में इन तीन कार्यो के कारण इन मंत्रालयो के व्यय में बडी तेजी से वृद्धि हुई है।

भारत सरकार के लोक व्यय की प्रवृत्ति की ओर अगर ध्यान दिया जाय तो यह स्पश्ट होता है की वर्श दर वर्श सभी मंत्रालयो में वृद्धि की हो प्रवृत्ति रही है अन्तर केवल उनके बढने की दर का रहा है, किसी मंत्रालय में यह दर बहुत तेज रही है तो किसी मंत्रालय मे इसकी दर धिमी रही है।

प्रमुख मंत्रालय/विभागों के व्यय प्रवृत्तियों का एकीकृत वि"ालेशणः–

भारत सरकार के प्रमुख मंत्रालायों एवं विभागों के व्यय प्रवृत्ति को तालिका क में दिखाया गया है–

(तालिका – क) (₹करोड़ मे)

वित्तीय वर्ष	कृषि एवं सहकारिता	रक्षा एवं रक्षा सेवाए	गृह	उच्च शिक्षा
2012–13 वास्त.	9553	230642	47778	20423
2013–14 वास्त.	10395	254133	53371	24203
2014–15 वास्त.	5086	285004	57300	22735
2015–16 वास्त.	15296	293917	67820	25439
2016–17 वास्त.	36912	351449	78360	29026
2017–18 वास्त.	37397	379700	87546	33617
2018–19 वास्त.	46076	403455	98115	31904
2019–20 सं.अ.	101904	435580	124082	38317
2020–21 ब.अ.	134399	471378	114386	39466

ग्रामीण विकास	सामाजिक न्याय एव अधिकारिता	महिला एवं बाल विकास	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
50187	4940	17036	25133
58666	5515	17999	27145
5452	1809	552	10914
77370	5753	17248	33121
95069	6516	16873	37671
108559	6747	20396	51381
111841	10070	23025	52953
122649	8885	26184	62659
120147	10103	30007	65012

(स्तोत्र–व्यय बजट 2012–13 से 2020–21 तक के मंत्रालय/विभागों के व्यय)

भारत एक कृशि प्रधान दे"ा है और जनता का अधिकां"ा भाग कृशि में लगा हुआ है दे"ा की अजादी के समय हम खद्यान्न में अत्म निर्भर नही थे लेकिन आज हम आत्मनिर्भर है इसका प्रमुख कारण सरकार द्वार कृशि मंत्रालय पर अधिक धन रा"ि व्यय करना रहा है। सरकार कृशि को बढावा देने के लिए बहुत से कार्यकम कशि मंत्रालय द्वारा चलवाया जिस पर हर वर्श बहुत बडी धन रा"ि खर्च की जाती है। उपरोक्त तालिका–क से स्पश्ट है वित्तीय वर्श 2012–13 में कृशि एवं सहकारिता मंत्रालय का कुल व्यय 9553 करोड रूपया

था जा वित्तीय वर्श 2020–21 मे बढकर 134399 करोड रूपया हो गया अर्थात कुशि एवं सहकारिता मंत्रालय के कुल व्यय में तेरह गुने से अधिक की वृद्धि हुई।

भारत सरकार का एक प्रमुख मंत्रालय रक्षा विभाग है अगर हम इसके व्यय प्रवृत्ति का अध्ययन कर तो यह स्पश्ट होता है कि भारत सरकार का रक्षा व्यय वित्तीय (तालिका–क) वर्श 2012–13 में 230642 करोड था जो 2020–21 के बजट अनुमानो में बढ कर 471378 करोड रूपया हो गया। इस प्रकार रक्षा व्यय में दो गुने से अधिक वृद्धि हुई है। इससे स्पश्ट हो जाता है कि भारत सरकार द्वारा रक्षा पर भारी धन व्यय किया जाता है दे"ा की आन्तरीक एवं बह्य सुरक्षा पर अधिक खर्च करना रहा है साथ ही हमारी सेना में बहुत अधिक संख्या में जवान है जिस पर अधिक खर्च करना पडता है।

दे"ा के अन्दर भाान्ती एवं सुरक्षा को कायम रखना गृह मंत्रालय का कार्य है। भारत जनसंख्या के दृश्टि से वि"व में द्वितीय स्थान है वही क्षेत्रफल की दृश्टि से वि"व का सातवाँ बडा दे"ा है अतः इसे अपने कार्यो को सम्पादित करने के लिए बडी मात्रा में धन की आव"यकता होती है। वित्तीय वर्श 2012–13 में गृह मंत्रालय को 47778 करोड खर्च करना पडा जो 2020–20 के बजट अनुमानो में बढकर 114386 करोड रूपया हो गया अर्थात पिछले 9 वर्शो में गृह मंत्रालय का व्यय लग–भग तीन गुना बढ गया।

किसी भी दे"ा की समृद्धि का आधार वहाँ की ि"ाक्ष व्यवस्था के उपर निर्भर करती है अगर दे"ा की ि"ाक्षा व्यवस्था सही नही है तो दे"ा ना ही आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकता है और ना ही सामजिक रूप सें भारत एक लोकतात्रिक दे"ा है जो अपने जनता के ि"ाक्षा पर बहुत अधिक खर्च करता है दे"ा की आजदी के समय हमारे दे"ा में ि"ाक्षा का स्तर बहुत ही निम्न था लेकिन आज हमारे दे"ा की जनसंख्या का 75 प्रति"ात से अधिक लोग साक्षर है वही उच्च ि"ाक्ष की स्थिति में भी सुधार हुआ है। भारत सरकार ने उच्च ि"ाक्षा पर वित्तीय वर्श 2012–13 मे जहाँ 20423 करोड का खर्च किया वही वित्तीय वर्श 2020–21 के बजट अनुमानों मे इस रा"ि को बढाकर 39466 करोड कर दिया इस प्रकार देखा जाय तो भारत सरकार द्वारा पिछले दस वर्शो में उच्च ि"ाक्षा पर खर्च की गयी रा"ि में दो गुने की वृद्धि की है। इसी प्रकार हम देखते है कि ग्रामीण विकास मंत्रलाय, सामाजिक न्याय एवं अधिकरिता मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के व्यय में भी लागातार वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। इस प्रकार हम देखते है कि भारत सरकार के प्रमुख मंत्रालयों के व्ययो में वर्श दर वर्श बढने की प्रवृत्ति रही है अन्तर केवल उसके बढने की दर का है किसी मंत्रालय के बढने की दर अधिक है तो किसी मंत्रालय की बढने की दर कम है।

भारत सरकार के मंत्रालयों में लोक व्यय में वृद्धि के कारण[1] :–

भारत सरकार के प्रमुख मंत्रालयो में वृद्धि का मुख्य कारण मंत्रालयो के कायो में विस्तार रहा है एवं साथ ही जनसंख्या में सुविधाओं में वृद्धि भी रहा है। भारत सरकार के मंत्रालयों में लोक व्यय के वृद्धि के कारण निम्न है–

1– जनसंख्या वृद्धि एवं नगरी करण
2– आर्थिक नियोजन
3– सामाजिक एवं सामुदायिक सेवाओं का विस्तार
4– प्र"ाासनिक व्यय में वृद्धि
5– ऋण सेवा भार में वृद्धि
6– प्रतिरक्षा व्यय मे वृद्धि
7– सरकारी उपकमों की स्थापना
8– लोकतन्त्रीय भाासन–प्रणाली
9– मूल्य स्तर में वृद्धि

भारत सरकार के मंत्रालय व्यय का प्रभाव[2] :–

भारत सरकार के सार्वजनिक व्यय का माध्यम विभिन्न मंत्रालय है इन मंत्रालय के व्ययो का दे"ा के रोजगार, उत्पादन, आर्थिक विकास, उद्योग आदि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पडता है। सार्वजनिक व्यय राश्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि करता है या उसको कम करता है। इसके द्वारा व्यक्तिों की उत्पादन भाक्ति प्रोत्सहित होत है या निरूत्साहित होती है। वर्तमारन समय में मंत्रालय के व्यय उत्पादन के लिए एक महत्पूर्ण साधन है। मंत्रालय के व्यय का अध्ययन तीन भाीर्शको के अर्न्तगत किया जा सकता है–

1–व्यक्तियों के कार्य करने तथा बचत करने की क्षमता पर प्रभाव,
2–व्यक्तियों के कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा पर प्रभाव
3–विभिन्न स्थानो एवं उपयोग में आर्थिक साधनों के स्थानान्तरण पर प्रभाव

मंत्रालय द्वारा किया गया व्यय व्यक्तियों के कार्य करने की भाक्ति को कई प्रकार से प्रभावित करता है–प्रथम, इस व्यय से अनेक व्यक्तियों को आय प्राप्त होती है और उनकी कय भाक्ति बढती है। पें"ान भत्ते, बेरोजगारी व बीमारी लाभ, वस्तुओं और सेवाओं पर किया गया व्यय व्यक्यिो की कय भाक्ति मे वृद्धि करता है। व्यक्तियों में अधिक वस्तुओ को खरीदने और अपने उपभोग –स्तर को उपर करने की सामर्थ्य आती है। उनकी कार्य क्षमाता में वृद्धि होती है और दीर्घ काल में उत्पादन में वृद्धि होती है। इस प्रकार मंत्रालय का व्यय निर्धन व्यक्तियों तथा बच्चो के लिए तो बहुत ही लाभ–प्रद होता है। दूसरे–राज्य अपने मंत्रालय व्यय द्वारा व्यक्तियों, वि"ोशकर निधर्रन व्यक्तियों को वस्तुएं और सेवाए प्रदान करके, उनकी कार्य क्षमता को बढादेता है। राज्य इन सेवाओं और वस्तुओ को या तो मुफ्त या कम मूल्य पर देता है। जैसे– निः"ाुल्क f"ाक्षा, उपचार सहायता, आदि। इन मंत्रालय

व्यय से व्यक्तियों के कार्य क्षमता में वृद्धि होती है। तीसरे– राज्य अपने व्यय द्वारा कुछ ऐसी सुविधाये प्रदान करता है जिनसे व्यक्यिो को अपनी उत्पादन कियाओ को सम्पन्न करने में सहायता मिले और अधिकाधिक व्यक्तियों में उत्पादन करने की इच्छा करे। रेलों एवं सडको के उन्नत होने से या अविकसित क्षेत्रों में इन साधनों कीउपलब्धता से व्यक्तियो की उत्पादन भाक्ति कई गुनी बढ जाती है और सभ्यता का विकास होता है। सिंचाई के साधनों में वृद्धि से कृशि उत्पादन में वृद्धि होतहा है और जल विद्युत के विकास से उद्योगो को प्रोत्साहन मिलता है।

मंत्रालय व्यय दो प्रकार के होते है, एक तो वर्तमान सम्बन्धी व्यय और दूसरा भविश्य सम्बन्धी व्यय। वर्तमान व्यय से तो व्यक्तियों के कार्य करने और बचत करने की इच्छा में वृद्धि होती है। मंत्रालय व्यय से अधिकतर व्यक्तियों को अपना जीवन स्तर उपर करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। यह सम्भव है कि कुछ व्यक्तिों में बुरी आदते उत्पन्न हो जाये, जिनको न होने देने के लिए सरकार को वस्तुओं और सेवाओ के रूप में सहायता देनी चाहिए। परन्तु यह व्यय कुछ भार्तो के अधिन किया जाता है तों इससें व्यक्तियों के कार्य करने और बचत करने की इच्छा में वृद्धि होती है जैसे विमारी अं"ादान देने को तैयार होना।

मंत्रालय व्यय आर्थिक साधनों के उपयोगों में परिर्वतन कर सकती है। यह दो प्रकार से होता है –प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक व्यय स्वयं साधनो का विपथन है। राज्य व्यक्तियों के धन को स्वयं व्यय करता है। यदि राज्य ऐसा न करे तो यही धन व्यक्तियों द्वारा दूसरे प्रकार से व्यय किया जायेगा।

मंत्रालय के कुछ व्यय इस प्रकार के होते है कि व्यक्तियो के भविश्य के लिए अपने साधनों के बचाकर रखना ही पडता है जौसे–बेरोजगारी व स्वास्थ्य बीमा, वृद्धा पें"ान आदि। उत्पादन एवं रोजगार पर सार्वनिक व्यय के प्रभावों का वि"लेशण करते हुए डाल्टन ने कहा था –यदि कराधान को अकेले ही ध्यान में रखा जाय तो इसके द्वारा उत्पादन पर बुरा प्रभाव पडता है और राजकीय व्यय को ध्यान में रखा जोय तों उत्पादन में अव"य ही वृद्धि होती है।

निश्कर्श:– मंत्रालय व्यय का दे"ा के उपर एवं समाज पर बहुत ही गहरा प्रभाव पडता है यह व्यक्तियो के जीवन स्तर को उपर उठाता है तो वही रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। मंत्रालय व्यय सार्वजनिक व्यय का ही एक रूप है इससे उत्पादन तथा आर्थिक विकास को नियंत्रित करने में सकार को सहायता मिलती है वही संसाधनो को वाछित दि"ा में भी मोडा जा सकता है। प्रमुख मंत्रालय/विभागों के व्यय प्रवृत्तियों का वि"लेशण करने पर पता चल रहा है कि 2012–13 के व्यय बजट के वास्तविक आकड़े की तुलना

में 2020–21 के बजट अनुमानों में भारी वृद्धि हुई है। यह वृद्धि कृशि एवं सहकारिता, रक्षा एवं रक्षा सेवाएं, गृह, उच्च ि”ाक्षा, ग्रामीण विकास, सामाजिक न्याय एवं अधिकारित, महिला एवं बाल विकास, तथा स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मंत्रालयों में क्रम”ाः14.06, 2.04, 2.39, 1.93, 2.39, 2.04, 1.76 तथा 2.58 गुने की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि में उच्च ि”ाक्षा एवं महिला बाल विकास को छोड़ कर लग–भग सभी मंत्रालायों में 9 वर्शो में दो गुने से अधिक की वृद्धि दर्ज की गयी है वही कृशि एवं सहकारित पर व्यय वृद्धि लग–भग 14 गुना से भी अधिक हुई है। इस प्रकार स्पश्ट है की भारत सरकार के प्रमुख मंत्रालयों के व्यय में वर्श दर वर्श वृद्धि की प्रवृत्ति रही है अन्तर केवल बढने की रफतार की रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1– डॉ0 जे0 सी0 वार्श्णेय – लोक वित्त पेज0 नं0 135 एसबीपीडी पब्लि”ांग हाउस आगरा

2–टी0 एन0 हजेला– राजस्व के सिद्धान्त पेज0 नं0221